अब अगाध साधु सागर अध
रूप न रेष भेष न ही कोई बानी
हित यानि नही सुई आसन तप
नही ससारा ॥ सीत उष्ण तें रहत नि
नारा ॥ ३॥ कैसी भाते या क्या क
ये ॥ आगे इहां न बेरा त्रहि ॥ व
कैतेज पुरष अकासे ॥ त्र पद ॥ म

अथ श्री हरिचंद सत गुरु प्रसिद्ध ॥
ॐ गोबिंद गुरु कै तिते मो मौन के
सब साध ताप्रसाद जस उचरौं
हरिचंद सत अगाध ॥१॥ चौपाई
अब गति अलख अनाहद भारी
जपते नष पति महा कुबेमारी ॥
नांवत मंत्र गावत हाक हिये

जो नित्यै आसै ॥ ४ ॥ ताकी दृष्टि
हि ये को आई ॥ ई छ्या सक्ति कहा
वैसो ई ॥ ताइ छ्या सब्द्धि का सी
महत तउ हा आनि अ ता सा ॥ ५ ॥
तब उ वो अहकार उदा रा ॥ जो सबौ
नाम कै है करता रा ॥ ता की सक्ति हो

तुम जानौ॥ विद्या वेद अविद्या मा
नौ॥६॥ परमात्म विद्या नित तेरा जै॥
मेरा सब द्वा जीव विराजै॥ सो है
सो घट नहीं नहारै॥ कछु बाजा
जा विस्तारै॥७॥ ता आगे घट दी
सरा यो॥ जत साई नाराई ए गायो

तातैं तीनि सक्ति विस्तारी॥ रजतम
सत ई हि विधि अनुसारी॥ साते
ग विसनु रजब्रह्मा रु वा॥ स्वौता
म सीतौ गुन जु वो॥ अहतरंग॥
अस पद हौ माना॥ बाहिर दृष्टि क
रत जु गताना॥ ८॥ तत्त्व पंचौ भि
त्रि सिष्टि उपाई॥ यौ संसार जु होयै

आरी ॥ अथ मिहिस बूर्ज का
सहिआयो तापीछे तिपुन चत्वा
यो ॥२॥ तेजततसयो ताआगै आ
गै आई ॥ जत्यकारे जदीसतहै
साई ॥ जत्यअथीतातें घट हुवा
प्रद ब्रीमंद गिनौ जिन जुवा ॥३॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ताकौ बसमहीप्रराजै॥१३॥ ताकौ
बंसि नृप इक्क होई॥ हरचंद नाम
जांनि त्यै सोई॥ पुरी अजोध्या मधि
निवासा॥ अमरापुत्त त्यै इक्कासा
॥१४॥ जेतासुरतेता॥ असमसारा॥
सबही अनिमन मतनु धारा॥ स
बही धर्म न अधान कोई॥

जहां अधर्म करत नहीं कोई ॥१५॥ घ
घी नोन भात फल दीई ॥ जो व्रत करत
महा सुख सोई ॥ येक बार वोव्रत जो
येती ॥ सात बार सुनि येनाफल देती ॥१६॥
छवो अंस राजा के आवे ॥ रति
सुखी कोन संताव ॥ पुत्र समान रैत
कु जानै ॥ पीता समान रते
योगही जुवा मद खाया ॥

बतनकोई बात्या॥ बड़ीमाई भगतीस
भिजांतै॥ त्यरकी कन्यासुमकरमांनै॥
आंमघनेघनजीवसंतावै॥ दयाधरम
सबकमनभावा॥ कदेहीकाहूदैइन
कोई॥ बिनांगुनहकैसैदईहोई॥१५॥
घरिघरिकथासाधहरिपूजा॥ तिहै
बांभौनहूमनहीदूजा॥ मनहूपार
बतदेहीधारी॥ अतिबत्तीनपुरी

हसारी॥२०॥राजा सिंघे असि धान
कोई॥सबही धर्म नेक उरि होई॥नृप
तिबा गबड़ो येक त्यायो॥तर फर फू
ल्य बरोस मनयो॥२१॥बनत दत जो नौ
उनमाना॥उपमा और गनै को नाना॥
फूलै फर बहुत प्रकारा॥ता मैं बनी
अगर न्यारा॥२२॥ताके फल
षाई॥साहबृंद रहै ता माही॥

रतनहारि गुन गाहै॥सुनौ केरेस्वा स्वा
पञ्च चाहै॥१३॥सुरपति आदितहो आ
ज आया॥सुरतेतासुं चैत्याई॥कोहिस
नाया॥बेदोस नाचरा चरेहो आई॥हर
चंदकी अस्तुन चत्याई॥२४॥हर बंद
बदो सती जग माही॥सबकौ देत कर
तनहि नाही॥सतनतो त्युत कंत्रे बबना
दो॥येक देव सूकर हो आयो॥२५॥

बिस्वामित्र हो तो उनमाई॥ सत तोत्र
नत्रे जौ ई हिमांशु ई बंन आयेर छां
नत्र मायो॥ रह्यो अपर छन जानि नपा
यो॥ सुर आइ बियरीत उमाई॥ इमस
मारि उमारि गिरा ई॥ बऊ जाति हा
घनकं कस्यो॥ बागा नत्ता पैं नही म
स्यो॥२६॥ रैति जाति बनी घो ना ही॥
दस्यूर मौबन माई॥ बोघो अस

डास्यौ॥ नृप आगे सो जाये मुकास्यौ
॥२४॥ नृप सुक हीड की कति नवही
सुन्दर बाग उबास्यौ सबही॥ स्तजु ग
नृप सि कारन होती॥ राजा सोच कीयो
अन सोती॥ २८॥ राणी सुनि भोन इव
पायो॥ धर्म ताहा अधर्म कत आयो
साधु रहत बाग के माही॥ बोदै गेर

सघरंमजाई॥२९॥तबराजसबसात
बुत्याषो॥चढोसीकारसुरयेक्रोध्रा
यो॥अबराजावीरघ्याजीवमारे॥
स्वारघ्रापसीकारवीचारौ३०॥
हरचैदरयेचढ्यौतहिगये॥दल
बत्यषडासुकतोई॥हाघ्याजोडद
सुदसकीनी॥बाणांवरुकसाजे

सुबत्यौनी॥३१॥ जासम्यं जेनीकसि
जोजाई॥ तिहितामीरीकीजियो॥भा
ई च हदिसाहत्यकारा होई॥नीक
स्यौसुरराईमध्येसोई॥३२॥ हौतौता
हादिष्टिसोआई॥ निकस्यौतबैजा
नमनहीपायो॥ज्यौंआहिदामनिश
कासैबिचेनहीदिष्टिइसरैभासे
राजाकहौजांतनहीपावै॥मोमध्ये

गयो सो च बऊ आवै॥ घो दो हा कि
प्रुतिं दीयो॥ मारि मारि पी छै तै भयो
त्यारौ त्या हौ त्यारै त्व गोये आ ये। रि बव
नमता बैठे पाये॥ रि बक्ह दिये सर स
गत्या गयो॥ हस्तै उन रे आ ये प गत्या
गयो॥३५॥ जोरै हस्त गिराउ चारै॥ रा
जा यशो बीन ती क्ह रै॥ मम बद भाग
क्ह आ बक्ह ब्वीजे॥ मेरो भव

सुबत्यौनी॥३१॥ जासम्यं जेतीकसि
जोजाई॥ तिहितामीरीकीजियो॥ भा
ई च हदिसाहत्यकारा होई॥ नीक
स्यौ सुरराईम धेसोई॥३२॥ हौतौता
हादिष्टिसो आई॥ निकस्यौतबैजा
नमनहीपायो॥ ज्यौं आहिदामनि प्र
कासैबिचेनहीदिष्टिहसरैआसे
राजाकस्यौजांनमनहीपावै॥ मोमधे

पावौ॥ अंतबसतरै आंनौं ज्ञ सगंऊ॥ जत्व सक
त्व पपीहै करवायौ॥ कुसकरित्वा गा अोरक
छु करवायौ॥ जत्व सकत्व पपीहै करवायौ
ज्ञीनोदांन चढ ए जब आयौ॥ विप्र कहै
नयौ पराऐौ॥३५॥ सब छंन धाम बोत्व मा
ऐौ॥ अंतबस ज्ञउस जांनि सब आयौ॥ ध०॥
राजातब पयादो धाऐौ॥ रथी सुर चढि॥ उब
टत्वायौ॥ कुमत्व परप जार छीनाज्ञी॥ चेटि
कतुरीरेष वत्यौ पत्वाज्ञी॥ अपत चत्वि पौ

तं आवै॥ चुब सुत्य गोवरु गह जावै॥ घ१॥
बसतरहे दुक बनमाझ॥ नृपत मानि ध्याप
तकछु नाही नगरी नकटै पऊ चे जब आई॥
तब रजवाग बबरि तैं नमाझ॥ घ२॥ मन्त्री औ
सबन कौ त्याग्यौ॥ बिपर कहै ये मोये चढायो
स रजवास कौ पजौ कीयौ॥ राजा कहै बचन
यौ॥ बोल्यो ग्यो जीव नि कहु नाही॥ म
यासारि मनमाही॥ सो चसारौ रजवारही
च्यास्यौ बरण उदास नीहारी॥ सुनि सुनि बिप
रहस मन माही॥ राजा नटो छामि हम जांही

च॥नृपकहे यौवन नाकौ तुमसाधो मम
धर्म हीराखो॥कौन कौन को जीत गहाऊं
रोसन करो बिप्र बलि जाऊं॥८॥तुम सब
ही के मन की जानौ॥सब को जीव ये कमलि
मानौ॥अरु भक्ति भीनि भीनि तन जुवा॥आ
गमादे नोरावर जाऊं सुत बीनता तेरठ गोत्या
ऊं॥आगमादे ढीलमते लावो॥तीनत्याष
को मन मनावो॥राजा बलि रनवा
सुतरूतास

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अमरजसत्येते॥ढीत्वकरौजीनछीपरीस
वै॥यौ-औसरबोहुत्यौकब-आवै॥५॥
सुतहूतासमुषी-अतिहोई॥तुमबिनअसी
कूपैपहोई॥ चलिभवनतिजेलगीनवा
रा॥सूरसतीसंमिमतधारा॥-ओंडा संचितस
तीतबत्याजै॥ चात्वीजलनंढोत्वढंमबाजै
पतेबूतसंमकोहै॥सुतहूहितासबिनै

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हैरचंदसंमदातानहीकोई॥बिप्रकहै
बसतरममसबही॥आयेयेकबोलमैसबही
॥५५॥तामऊयेकतिहूंकेदीनौं॥दुकदुक
करेतीनूंकरेत्वीनौं॥ज्यंमगमैंबटपारेत्रू
टेहि॥तागादसीकछुनहीछुटिये॥५६॥
असीनांतिबिप्रयेकीया॥कलमऔर
कहाहूयदीया॥कहैनृपमेरोकछुनही
धामधर्मआयाडीनमांही॥५७॥मोसंम

अबैरी तहि करि मानौं॥ मरौ वोत्यसा
चैयो जानौं॥ राजा मरै ओत्रे आवौं॥ दिव
निराधित राधिटी कौ करवावौं॥ ५८॥ यो
दृष्टांत मोर करि जानौं॥ मोसमाने बांमन
कूं मानौं॥ इतैं राजे कूं नैं यो भावै॥
होतब ईसो त्यो कहु पावै॥ ६०॥ रवा
सुर वो बाचै॥ अबरिष कहै दामदे

के अपनौं बोल हिंछि टका दौ तोम जो
ऊ मति कूरमा दौ॥६१॥ सुत बनिता बे
चो तं नमोरा॥ दांवन पकडि रा॥ कु
तेरो॥ घरा मोरि बिचन घो ना कही॥
जाये बे चो ओ घरा माहीं॥६२॥ राजा
दो बाच॥ अबरि षकद दाम दे जाई
माल भंडारन हे ब्रा जाई॥ हेरी चंदै

कत्यासपगाई॥स्यौप्रसादैसबसिद्धि
पाई॥६४॥सिवभगवतजुदिमतिजांनौं॥
साधेबसाधयेकैरिमांनौं॥साधेबनज्या
मुकतेजोपावै॥सोईगतेसाधांसौंपावै॥६५॥
त्रैजेकांमसुरगतिहोवै॥धराफिरिआवै
तजगजोवै॥६६॥येकपुरीकैत्यासहीरई
योहूकृतगाईउहैयेतआई॥६७॥राजा
बोवाचै॥बिसूबांणभरिइहोपगवै॥ता

[illegible]

सामन्तो[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥सूरजसुंरिषवचनउचारत॥अधिक
तेजकाहिनविस्तारत॥२६॥तपसीवमौ
मेरसुरसारा॥तवरिवतेजजुत्यमबीसतारा
परत्यक्कात्याअगिजिबिसतारी॥कोमत्य
देहअदेकप्रजारी॥२७॥कोमत्यकुवरप
सोधरनारी॥रांणीतांमुरछाआई॥त
वतत्यायेकूबोलनहीआवै॥नीरवीना
घांणीइवमावै॥राजारत्योतासठीगव

तैं इती-नो ममैं नाही मानौं यौ बचन बचित
हि गंई॥ तब नागाती नौं करि त्यी या॥ उहा
ता पड़ बेग ए कौं दीया॥ निज पुरित भजि
करि कीयो पीयां नौं॥ त्यो कस कत्य हाहा
कर त्यरत्यां नौं॥ रोजे बिरोग जि पावै नमां
ही॥ जो रह्यो सब त्य न यौ ति गंही॥ ६९॥
कहकौं न कहता न ही आवै॥ क पढै
जो क बिस बस बगावै॥ ताय अब

करिमाई॥ जो कछु हुन ई सु सैंन समझाई॥७॥
जो सब नग्र चल्यौ होसा था॥ गढ़ की ये जो
रि दोउ दाया॥ अपन अपनै धामसी दासे॥ हम
रसंगे काये हुय पावै॥७१॥ सो च घ नौं सब
हिन कंहुवा॥ राजा सूरसो चतैं जुवा॥ सुरा
तैं न बिन दांन न होई॥ काये दांन करै काई
॥७२॥ आपसनी ओरन सुं कहै॥ धरम कर
त को था कि जिनि रहै॥ देह बिछूपमुवाप

सी॥ बांमनकहै दीत्व हकसी॥ अबघा
डामैं आई रहानी इन कमुषि टक चोवौ
पांनी॥ ७८॥ जोतेसमरै अंगतिसोई॥ मु
षेजत्व चोयेमरंगेसोई॥ इतनीकहिराजा
ऊगिस्यौ॥ बांमनतबहीसोवमनकस्यौ॥ १९॥
ऊंदिजिन्नरीजटीयेनकीजाई॥ बिग्रत्वी
योजत्वमातरमाई॥ मत्वंरोतासदीषत्वाघो
पीयो नही जत्वसीसहत्वाघो॥ ८०॥ मात

पीता प्यासे मैं पीवूं॥ तो के तेरे दंत मैं जुगा जीऊ
राजा रांनी जाये पीत्यावो॥ ता पीछै मेरे ढगे
त्यावो॥ ८१॥ तब जत्यत्ये राजा ढगे की नौं
जत्य पीवा मेरो रंणदी नौं॥ तब नृप कहे रां॥
णी कूं पावो॥ या अब त्या जत्य बीत मरि
जावे॥ ८२॥ तब ही जाये रांणी ढगे की नौं
पात्र नस्यो हात मत्यी नौं॥ रांणी कहो कूं
हा मोये दीजे॥ पीत पहत्वी पांनी कूं पीजे॥
॥ ८३॥ त्या बेत्यी बीत॥ जीव जांन्यौ॥ वां

ति आये॥ मुरति देखि बहुत सुचे पाये॥
पीछै येक बीनती कीनी॥ मनही मन इछा
करे त्रीनी॥ ८८॥ तेरा दरसन अब हम पा
पाया॥ यो ऊहरि निकटि महा फल आया॥
घमार छाबदेन मति मानौ॥ नकते काम
ता फल जीन जानौ॥ ८९॥ हरि दरसन जि
न गति हि चाही॥ छूप हि त्याद बसाऊ ताही
तब हि ईष्ट बर देन जु आयो॥ ना दिसंगि
मांगर सपायो॥ ९०॥ ईतनैं उतरि चले हे आ

गें॥ ताहीवसे सुमरत अंतरागा॥ येहैवा
तउहि मांमन आंती॥ हेरिसौं दास जुदे नहि
जांनी॥१॥ जनप्रभ्रु तबही हरि तोषे॥
सकुवरत्यो जु साध संतोषे सब असतां
न देव जब पाया॥ वा सोत्वेन गोरक आया
॥२॥ निसा मांही रेव की योक जासा॥ वांमं
न कहो वास कहो वात्यो॥ वांदे चरो दानो
राकी ना॥ येक येक तीनौं सरिदी ना॥३॥

कीये निवासि घरे वै साई॥ त्यो कोऊ मो त्रिजा
संगि मि होई॥ सगत्यो जगत तमासा जोहै॥
ऋसे मन घ मो त्रि त्वे को है॥ ८३॥ दे घो कं
न बिपति ह आई॥ ऋसा मो त्रि बिन्न तहै
भाई॥ बिप्र हि कहै कहा रि न तेरो॥ ऋचि
रज हम हि बऊ तइ न केरो॥ ८४॥ दिये या
हि मो त्वे त्वे को है॥ माये भार नारि मन मो
है॥ को मत्व कर त्व न रोटा माये॥ माता पी

ता पिता दोऊ गति हाथ ॥२५॥ येक चारा
जा सि रि त्वी यो ॥ तास मिसनी कौन कवि
बी यो ॥ गन का मोत्वि त्वैन इक आई ॥
सुरते पाक नारि सुनि धाई ॥२७॥ गनि
काउ बा चै ॥ बिपुरहि कहौ याहि कैवै
हू ॥ बामन क हौ त्याष येक ले सू ॥ ना
रि साथि ग्रमरै करि दे सू ॥२८॥ तू तास
हो बा चै ॥ तब तू हि ना स म स्यौ मन सा
ही ॥ कौं न गैरमा ता कू ले जाई ॥ ऐसो

राजीव आयो॥ भयौ गैर राणी नहीं पायो॥९॥
राजा उवाच॥ अकर्म ब्रह्मते ब्रह्मौं ही तबेरो
विप्र मानिबा ऐक मेरो॥१००॥ गीत कारवा
दै॥ तबगी कामि जिव बत्त बखान॥
आपसरीका और जानै॥ मागे भी बम सक
तेवा जै॥ तया मुत्त मोहि कर दीजै॥
करवत तोहि नारि मुत काजै॥ तुनीन
बाबे खन ते आज॥ दैतै पर होइ कही
को दो पुत्र मानिबे अन्न हित दीयो॥

असो पुत्र दे विधि जीजै॥ ताकसाट
काहा धंनत्वीजै॥१०२॥ राजा वो बाबे
न कटीराम जाये कर नाही॥ राजा इवे
कहो मतमाही॥ बांदर ये कसर मसो
ई॥ छुटो रह चनी ही कोई॥१०३॥ गी
न कानाक तोरे त्वे गयो सब का कू को
अचुमो न यो॥ असी बिदिता हा कोते
गहोई॥ देवे अचन कार सब को॥१०४

दोहा॥ सत सहस अरु तीन हा॥ बचन सज
सिद्धि होये॥ ध्यान दसहं का ध्यो ॥ मुनि
नमानौ कोये ॥१०५॥ सोरठा॥ धर्म पुष्टक
रि जानिये॥ षिजि राजा हर चंद कहौ ध्यां
निये है उर आनि॥ यऊ बये कम षनी बस्यो
॥१०६॥ चौपई॥ यऊ हीन यास सुनौ भाई॥
ई तनी गोर कोपसु दिसाई॥ सीत घटै को
भ्रम तिछु डानै॥ ई सटै बी चेत्र तर करवा
वै॥१०७॥ सन का दीक बकूट पधारि॥ इरा

रि पाव हि बचन उचारे॥ नगन कहां अप्रा
ता होमाही॥ आडी दूरी जीन दे नाही॥१०८॥
येदरस कहे अति उकत्यांने॥ पी है गाये जा
ही जांनें॥ रोकी गउ ज्यूं सीस हत्यो है॥ मन
ही मैं ई हां उहा हो इ आवै॥ दरसन वाचि
अंतारा व अनायो॥ कहौ अर्थ सोई तन
पौ॥ कथा वै धै जो उचरौं कथो॥ सप्त सिकं
चि धावै सब ही॥११०॥ समतर सरवर
बुतपकी नौं॥ ध्यांन स

दी नैं ॥ दहि चीस सतीर थ करि आवौ ॥
बि. चि दत ज्यौ सुमरत मन दौ ॥१०११॥
अस तत्व येक नैसौ सुध भाही ॥ तहां जोग
दीपिका इतारी ॥ ध्यांन कर त अंबू सतक
दे ॥ तब सुरन ते अंबज लति सैं जये ॥११२॥
जो नेघ्यांन जहं वारि यानि सुरै आसन मो
रा रहु जै अस तरै ॥ वा कतन ब्रह्मा घरांनौं
मेरे जो क्ष्मिर तंहै मानै ॥११३॥ अबत्या
कहि येक बंद सुनांदौ ॥ मुनि सराप गौ

रकहा पावै॥ तब सुरपति बोल्यो यूं ऊ बां
ना॥ असी चुक कहा मन आनी॥१६॥
सा चसरापत मुकुत जी वै पावै॥ अगिति
ताव दे घाट न पावै॥ यूं सुनि बचन रैमा
च्याई॥ तब असतांन ता हा चचि आई॥११५॥
पग जो तहा पर भ्रु बी दे ऊ न काया॥ सक
ल सी गार बनों अंग साया॥ बी ज जत्री ज्यों
आन उरजाई॥ दमक निबचन कामनी
सोई॥११६॥ कामक बैंन ब होत बी देखो

त्यै॥ मुनि न दिगेन्न न ही बोलै॥ तब रंभा
येक न्नेक बनायौ॥ बैत्य चढी अस्तन
बदलायौ॥ ११७॥ नित्तनी निसा सि तिलक
लिलाट ही॥ सीस जटा अमोतन घाट हि॥
करि कुलमनौं सिव सो वै॥ बांनी जोग
तास मन मोहै॥ ११८॥ त्यागी सुरति तटि तहां
आई॥ जोग बचन सुनि अति रुचि पाई
ता पीछैं न्न येबदन कीनौं॥ सति सीगार न
उर हस लीनौं॥ ११९॥ छुटि संमाद्रेग श्रु

नीकेरी॥ नारिसरीरकी याउन फेरी॥
जगी कांमना बचन कहा नौं॥ फेरे सरा
पठ गयौ मुनी जांनौं॥१२० छंद जौ ओरही
उनहारी॥ पत्री बात बषीकुमारी॥ कत्व
कारनी यो कहा कीनौं॥ स्यौ सत्य पदर
छंद गिन्वी यो॥१२१॥ रनावो बाचे॥ यास
राप नारि जांन्यौं॥ सीस चरन धरि बच
नबषांन्यौं॥ कुमरो बचन अटरनही

टेर॥ मोरउ धारकतसंमरन मरै॥१२१॥
समतरबीसुरबोबाच॥ देसकनौंजराये
हैकोई॥ ताकै जाये कन्या हुहोई॥
घीहाज जाते चढ़ाना॥ तोकूं नबरैगेजां
ना॥ सांदैनसुर मरैगे भारी कलकारनी
बचनउचारी॥ आगंकथानहीबीसता
रैं॥ अगतिबीनासैबेपउचारी॥ आगंमु
नीफिरिध्यानहलागयौ॥ अयोसातकोप
हीमनिआगयौ॥ अकतकाजिअसंगयौ

त्यायोरं आफिरिसुरगाम्रपायौ॥२५॥जब
उहिकहौउधारनबतावौ॥तबहीरिष
बोत्यैगतिपावौ॥त्यौंहरिचंददोषमसि
मांहौ॥धरमघटतोकोपहीनत्यिजांनौं
बीयशोवाच॥बिषयाजेराजासुनारी॥
गुदरीपरउपरीसारी॥मोत्यैमतोयेकोई
नहीआवै॥कत्यिजीनाकहिकायेबतावा
वौ॥नकटीकहांनाकबिनकीनी॥
नैचात्यनीनारिनहीत्यीनी॥

को घर घोले॥ को कुछ कहै इन हि उरै साटै
॥१२८॥ यौ कछु कहै तिहो जाई॥ कत्रेजी भौ
घरि कहा न्याई॥ बांमन कहै बैन सुनि
मोरा॥ ईहां मोरै कोरे तहतेरौ॥१२९॥ बैन
कुटन करो ज्यौं मंजांऊ॥ करो राज जाये ना
जगांऊ॥ राजा बोलाचै॥ नरप कहै सुनि
बीनती मोरी॥ सकत्र हौ ऐसी दि कीरपाते
री॥१३०॥ बीपर बोलाचै॥ बांमन कीजे
॥ बोत्र साट न्रप नौ चंनदीजै॥ बिग चत्यो

ईनीक: रनैदेनीक्षारी॥१३॥नायेदेमेरा
नाउतेक्षाद्वै॥नमोमाहेरिसीमहनाथे
येहुक्षनमोकुमहदंतीनाकेहिपतेम
रीक्षमांती॥१३४॥हिमवातराजामे
नाथ: येनदीराजाधेदासी॥कहैरमी
क्षरसुनैकुवा॥सीलनारकाहेतुमक्ष
ता॥१३५॥राजाद्वेवाद्वै॥दीनकद्वेमदा
नतदीधे॥बिद्वामीनवेचनकाद्वे॥
मकनताजाविसुक्षाबितधोम॥मक्ष

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हरि भगति तिन साधी॥ अनेक सुतन मावो
नाई॥ अनेक सुमरन हरि हरि बारी॥ हं
त्र मोचे तो रे सुत नारी॥ मुख मागसो तो
देदीनाऊं॥ दहलि नाहे मोरे घरे जाऊं
॥१६॥ मंत्र समो देवरे जो कोई॥ ता
को प्राम मोत जो होई॥ तरदेई क्यों मो
त्र बीकारी॥ तातें चक्रा मुकति पदमा
वै॥१७॥ तंत्र हरि भक्ति बिना तहकी
ई ताको तंत्र धंधो ताबहे मोई॥ बीप
र राजा मुख मागो॥ मेरे भागे हं तुम्ह

यौ ॥१३१॥ पुत्रनारि संगि जावत्वेवा उ॰
ई ॥ डेडत्वा षदे मोत्वे चुकाई ॥ अपिनसु
सरमा नाम षदेऊ ईन नौं कहा बऊ तक्की
नत्वेऊ ॥१६३॥ राजा बोलचै ॥ मानस
मत्वोहा घदेत्वोई ॥ तो कहांव बातंको
ई ॥ तुमई सबान जो गिरीषराई ॥ मेरी
तुमवडत्रीरि चुकाई ॥ साटि मीत्वे सो
बचन करित्वीनी ॥ बिसवामित्र तिव
हदीनी ॥ बिपर कहे आई ॥ यौऊ मोपै ॥

दैदत्ता षमांगत हुतोमैं॥१६॥ राजा
बोला है॥ चली बात राजा कहि प्यारि
सुतबीनतारि षसंगिम्यारे॥ बिदुरन
बिरचरा तनि भारी मावबीद्रे सहै कौ
नारी॥१६६॥ पुत्र बोला है॥ सुतहू ता
सम्रेम उकला है॥ पीनाई ये कौ लोरा
है॥ टल करन कौं नाही कोई॥ दैदत्ता
ना षदैनासिरि सोई॥ करमहीन का
हि कहु जाय॥ बुरनीमन मदर हुन्ना

पांचबरसकै यूं गिति लीषी ॥ पिता
बीप्रति अपनी दीष्टि देषी ॥१६७॥
कछु नृपति कीट हत्न न करी ॥ अब
करता असीगति दीनी ॥ देहि हसिस
पनि बुद्धि अदेकारी ॥ गत्न बांहां द्वि
रि रौयौ नारी ॥१६८॥ फटै हीयौ मुष
बोत्न न आवै ॥१६९॥ राजा बोलै ॥
कात्न पाये सगि ऊप ज्यौ आई ॥
कोई कात्न बीछो द करा ॥ ॥ येक बां
मा कै त्न दारी ॥ दूजा बांहां न्नपत ग

तिचारी॥१५०॥ माता पिता बिछोह
निभावै॥ रोवूर रायेसमजावै॥ रहो
पुत्र जिन करो वाषादे॥ माकोट
हैत्व करै सोइ साच॥१५१॥ पुत्र नो
चै॥ तुम बान कौन हमहि प्रतिपा
॥ कौन बिदि हम न कौटावै॥ का
ये कौं जीवजु गमाइ॥१५२॥ रानी नो
वा चै॥ रानी कहर हमसंगतिरै॥ कसै
रहूं नागनही मेरे॥ मंमदै नाग निही

भरे॥मैंमद्भागनिपतिइषदेषे॥पुरब
पापआपनाल्येषे॥१५३॥पितकैसंग
बीपतकुछनाही॥मांगिजीषयेकतो
ररहाई॥राजायेकसोचमनिआनैं॥
अबत्वाकामसकतिकरिजानैं॥
१५४॥वारेषमोलेटहत्वकेत्वीनी॥
गांठिषोलेमायागीनेदीनी॥पांचैब
रषकोबालकमांनैं॥सोसुतटहत्व
काहीजांन॥देवदेवकरिकीनाबीछो
रा॥राणीनृपनकरकोमोरा॥ ५५॥

बिप्र जाये अमनै घरि राये ॥ कुबद न
अनौं कदे नही नामे ॥ जो जीव सरेट
ते कहि आवै ॥ मन सुमन मो क्यो
हुय आवै ॥ बिप्र संगे जो मन सरहावै
॥ सोम नि सदा गति कौं पावै ॥ १५६
बिप्र बदौ बूद्ध आतारी ॥ वाको सु
बद हसी हसारी ॥ लाय मे मैनी को
नहीं वै ॥ वाक सबदे मेर घरि आ
है ॥ १५७ ॥ जो कोउ कहै दी यो कौं ना

।ही ॥ न्न्य तसती त्वेत है नाही ॥
छ तो राज जी न दीयो गी ॥ सो क्यों त्वे
ओर पमांगी ॥ बिस्वामित्र कहै बी
तत्वीयो ॥ अगनि सुसरमा ॥ कागि
दीयो ॥ बेच मोत्व सो बोल बुत्वा है ॥
दीयो कीयो कहा यो आयो ॥ १५८ ॥
बऊ है क्या राजा प आई ॥ त्वीयो बो
जसु घर हाई ॥ बिसवामीत्र रुद्र

बैनकरारेनृपऊचारे॥१५९॥कांम
कीयौ॥प्रदकाबौ भाई॥आदी देहैकां
मनकाई॥मालमोरिसगत्यौ भरिदीजे
॥कनृपप्रेमनौंराऊत्वीजि॥१६०॥
राजादोवां वै॥कहयौनृप धीरजैकरि
स्वांमी॥सबदेऊंगो अंतरजांमी॥संक
टपस्यौसरनंजीकेरी॥धंनीरषिहैअ
जीतमेरी॥१६१॥कामबगमदेसोइ
आपबीकांमीहैंहैदहोई॥सरबस

देतकहसाहालकहावै॥देषोसतअछर
जयेहआवै॥१६२॥गासछाविआन
तअनिमानै॥असोकोइकहाकरिजो
मैं॥राजाकहैबीनतीमेरी॥रिषरीसेतजो
मरैनहूतेरी॥१६३॥अरजकरीसायेब
सुनेमाइ॥रूपहोमुमनीकसोआइ॥
कांकवंकसंगीहैसारा॥नीलेवरनदेह
उनहारा॥१६४॥बानीबीकसकयहा
करी॥क्यूंकरिमनऊदेतहैरेरी॥राजा
हिदेषिमूमयोबोल्या॥होयापुरषत्वि

[illegible]
[illegible]
[illegible]

मुहि माग्यो क्यूं पावै तमोला ॥१७१॥
कहरि षीसुरबोल्यनटारौ ॥ मेढत्या षैमैं
छुटिनपावै ॥ टांकीरहै कि टांकषिका
ही ॥ दमरी घटनऊ नभाही ॥१७२॥ यो
बिचारकोपडाघटहोही ॥ मरजतहाषि
तगेनतनकोही ॥ टहैलभवोतअस
घरिआवै ॥ गलीरहैनाकदैनहीपावै
नृपतकह्यातबहीछ्यातोरी ॥ करिस्यूं
टहैलैसक्ति जोमोरी ॥१७३॥ कपडावोवो

यै॥ऊपड़ौ कहै दांमगा नित्तेवो॥मेटत्या
षमुष नाथ्या द्वेवो॥बिसारगयौ हमसु
षमऊ मा॥ रिष्टा कहै मा॥ अत्मा
यो॥१७॥राजा दोवा वै॥ अब करि
षमा छीदेमो ही॥मेरा जो नावै मूंहोही
॥बिप्र कहै कारिजेसी॥ अतेरौ॥मांन
सबे वेदी ग्रंथ मेरौ॥१८॥ नामबी
ज्यो परि बोहास्यो॥हबऊ तोरत टरत
नहभटास्यो॥ऊपड़ौ हम नमघ्रस्या

दीनमरहैटमराघ्यौसोई॥ आऊ भोमिदे
सबकोई॥ मुहमतिदे घौकसिकरि
त्यीज्यौ॥ तोमानसतुमजात्यनदीज्यौ
ज्यापडावोबाचै॥ सेरचंना भोजनहै
तौकौहरिचंदकहैघेनाहैमोकौ॥
करवांगत्यी आवनत्याग॥ येकअती
तघडोमुखआग॥१२८॥ अतीतवोबा
चै॥ मुखोकहैभोतदंनकेरो॥ हरि
दकहैरजिकहतेरा॥ बाबत ६

याबिद्धिमकलदिनायेन्नायो॥१७२॥
रिमवोबा वै॥बअरिक्ष्यारिमदरे
न्नाइ॥[illegible]कदरकतांनाइ॥म
मलदे[illegible]हहितामहिव्यानै॥[illegible]सी
मोपदेन्नकंबतमादै॥१८०॥[illegible]वसन
रैंतीजलकेरौन्नरनोमातेन्नकारमे
रो॥ चौकोदेइ[illegible]मोद्धानैमुतहवास
दाधमतमंतरे॥१८१॥उसदे न्नाबिलन
जेमांरानो॥ मौन्नाबिक न्नायोनिलजो

करैटहैत्वरिषमदरमांही॥बालकसंगधेत्य
जांही॥१८२॥सेवाकरिरिषभोगतगावै
॥पातविहोयेउनहिपुरमावै॥माहाप्रसा
दैसाधघरकेरो॥भागहोयेपावतहैंघरो॥
१८३॥संतगुरुसांमझुनसुरचावै॥देवैभाग
तजिभगतिकुमावै॥योबीनतीअमग
पुरिकीजि॥संतचनकताहमदीनै॥१८४॥
जूगतिवाहिरहैघरिचेरौहोयेप्रसाद
रांमजीतेरौ॥जुहिनिमूहिहैकोअन
नितगावै॥साधिताहोसुध-

१८५॥राजाको बाचे॥राजाकहै ब्यासमुन
सेती॥महाप्रसादउममा कैता॥तब सुन
देव भामोतसुनाई॥महाप्रसाद महात
मगाये॥१८६॥सो प्रसादसदा ये माने॥
बिप्रतिक हामनि भकतिकराई॥जब
हुतास जाये बनमाही॥तुलसीपुपत्रत
होताही॥१८७॥बातकसंगमुहरयो भाई
जोदीतमध्य नरयेदरसाई॥बिन ठौरा
कपादकमुछूटी॥उमगनमध्ये बंद

मनसंकनंआनी॥रिषबनकरिमीहैरानी
॥१९२॥रेषसुनसंगिसबयेबोले॥कलिकू
कैसबहीबोलि॥आगेचलतअसुन
भयेसुना॥बालकक्कैचलोमैरिनु
ना॥१९३॥बालकनोबाच॥येकबा
लक जोतिसंकरकीया॥सुगनोपढि
समजबीया॥रिषबालकक्कारिजिन
कोई॥पढेगुणोंअसीगतिहोई॥

ई॥१८८॥बरीयाहोई मातनबजानै॥सुत
हीदीषिसीतत्व मानि आनै॥पितकोध्या
नसदामनमाही॥पतिजगदीजदेहना
ही॥१८९॥बरागीगुरकौंअरादैप्रतिबता
असेअतसादै॥करमबीसातकसोटी
आई॥सोमैंअबहीहूंसमजाई॥१९०॥
रिषबोबाचै॥आजेबबडीषबीदीन
आवै॥पुजाहोयेपापजोआवै॥हूतासबो
बाचै॥तबसलामकरीहूतास॥कौपपरोबच
मप्रकास॥१९१॥तुमरेबचनकहानहीं

पसबायेक संमजतसारा॥ तिनकहा असो
कारा॥ करतार की मेटी नही जाई॥ मनकी
सेक गिरसेते हित्यागे॥ होतबहसौ बिदा
ता आगे॥ बात्यिहु तास अपुटाफेरी॥ होत
गुत्यांम असुबकीसकरी॥ १५७॥ घरको
धनी करसोई छाजै॥ तुम घरि जावाफि
रोनही आजै॥ बांदीकहा मोत्यिकोत्ली
यौ॥ धनीका जिमतसकनही दीयौ॥
१५८॥ बात्यकबोबा घै॥ तबसार

ई॥१८८॥बरीयाहोई मातत्व जांनै॥सुत
ही दीषि सीतत्व मानि आनै॥पितु कौ ध्यां
नसदा मनमाही॥पतिजगादी जदेहना
ही॥१८९॥बरागीगुरकौं अरादै प्रतिबत
अमैभ्रत सादै॥करमबीसात कसोटी
आइ॥सोमैं अबही हूं समजाई॥१९०॥
रिषरोबाचै॥आजैबबडी अबीदीन
आवै॥पुजाहोयै पोपजौ आवै॥हुतासबो
बाचै॥तबसत्यामकरीहुतास॥कौंपपरौबच
नअकास॥१९१॥तुमरेबचनकहानही

प्रसबायेक संमजत [illegible] ॥तिनकहत [illegible] ॥
कारा॥करतारच्छी [illegible] जाई॥मन [illegible]
संकगिवसेतेहित [illegible] ॥होतबहसा [illegible]
ताग्रागं॥बाचिस [illegible] ग्रपुटाफरी॥ [illegible]
गुत्तोम ग्रसुबक [illegible] करी॥१५७॥घर [illegible]
धनीकरसोई [illegible] ॥तुमघरिजावा [illegible]
रोनहीग्राजै॥बादोकहामोत्रि [illegible]
यौ॥धनीका [illegible] मतसकतर्द [illegible]
१५८॥बात्वेक [illegible] चौ

सामनि॰ग्रा॥ हमहु हितासत्वा रहं॰ग्राशी॥ गये
तहां बनमध्य ग्यारे॥ सोपसमत्व कौं बिच
रिसारे॥२००॥ चढ्यो हुषपहुतासग्रके त्वो॥
होतसोपहाथ तहां मेल्यो॥ सरपयेक तरवेर
पहोई॥ तिहंसो डस्यो पस्यो ध्वरिसोई॥ येक
सरपडस्यो सुदरतौं पस्यो॥ छु ट्यो हाथ डांत
ध्वरि गीस्यो॥ सगत्वे बात्वक मीलि तहां॰ग्रा
यो॥ गारिहुतास कुं निगते पाये॥२०१॥ बा
त्वकवोबाच॥ कुंडसीसमकत्व मिसुरवे॥
बीनहुतासग्रके त्वाहोवे॥ याकै पीडबो

लनहीं आवै॥ पतिहूत सतबा संमझावै॥
२०२॥ कात्यसर पड्यो तन मेरो॥ होति ब्रज्र
सो जीव इहीं केरो॥ त्यागी चौट मोरतन भा
री॥ मस्यो हरि ते गरद मझारी॥ २०३॥ हूतास
दो बाच॥ मति रोवो हरिनाम उचारो॥ यो
ओसरतु मरो है यारो॥ अनि सुसरमा सौं या
कये॥ अब तुम त्याज हमारी बये॥ २०४॥
दीनामात्र कामे नहीं आयो॥ हरत परिति
सरिर ह्यो सनायो॥ अब आगे पनि मतुर
जानै॥ इहा रह्यो सिर चत्यो पीरान॥ २०५॥

अहमेरमन कीहवसी॥ और हिजन्मक
ही भरदेसी॥ अहमेरा बंदन योक हियो॥
अहतासऊ होइ रहियो॥२०६॥ मोरि हुतो
मात पग परीयो॥ तुमइ तनीसाब हितक
रियो॥ कहयो मुषहो तिब याहु दो॥ सु
तहु तासपस्यौ बनमुदो॥२०७॥ कालसी
परि माढो है नाइ॥ होति असो मुदो बन
आइ॥ अगनि सुसरमा अंबिय बमेरो॥
ही होमतिछा मोउसकेरो॥२०८॥ मोरिमर
नकोसोचनकोइ॥ माता मोरि बमोहुष

होई॥ मोबिन माता कदे नही मानी॥ तुम्हा
मोरोरही स्वानी॥२०९॥ पाला मोरे स्वौन
इम पावै॥ हमघरि निसनीर भरावै॥ कहु
कहा बत्य चत्य न कोई॥ अबे ही हो असी बे
धि होई २०१०॥ आवमी त्याप है ही कीयो॥
हंमतुम दश्वी छोड़ा दीयो॥ तुमारि संगे महा
सुषमायो॥ अब करौं अंत ही आयो॥२११॥
ईता बचन हुता सउ चारा॥ छाती कुटप स्यो
धरि सारा॥ ज्यूं हुता सनि सब

ध्यारे जांन्यांयेमुद्रा॥२१२॥ तबरांमहूतास
उच्चारे॥ जीवननहीमरनमनिधारे॥सबत्या
क निजबसवतसमारी॥बऊरिलमिनेम
तुद्वारी॥तुमबिनकसैघरिजाही॥येहहू
तासेबनतहैनारि॥कहहूतासुसुनौहौनाश
हारहोमतेरांमहूहाश॥नेत्रभरिअसाक
हिलानी॥तबसबहिनअकमादीनी॥करी
अनामडिगरिघरिचाति॥देखोदशीकौनघ
रद्वाये॥इनकीमायेबुजितबपावै॥
बीनमणिसरपचवियेमारि॥नांरांनी

कहि कै कहा सो वचन न आवै। ऊनी पंथ ने
हारे॥२१३॥ रानी बोलाच॥ सब लाल को देखा
वह नाही॥ रानी सोच कयौ मन माही॥ जौ
वोपै कहु तो दिव आवै॥ जौ तु नाम अगोको
ही ध्यावै॥२१४॥ सो अब नही दई कहा को
यौ॥ अचरज सास रानी जब त्यौ॥ तब धार
नाम मुख उन केरी॥ दई कहा बोल हिमटेरी॥
२१५॥ बालक बोलाच॥ बालक निकटे
समटि सब छुवा॥ रोये कयौ सु
मुवा॥ रानी नही बोलन माही॥

प्यारे जान्यो ये मुझ ॥२१२॥ तब रामहू तास
उचारे ॥ जीवन तही मरन मनि धारे ॥ सब त्या
क निज बस वृत समारी ॥ बऊ रित्व मि नेम
नुचारी ॥ तुम बिन कसे घरि जाही ॥ ये हू
तासे बन तहे नारि ॥ कहहू तासु सुनो हो नाथ
हो रहो मते रामहू हाथी ॥ नेत्र नरिन्न सीक
त्वानी ॥ तब सब हिन्न क मादीनी ॥ करी
न्नाम डिगरि घरि चाति ॥ देखो दशी को तब
रघात्ये ॥ इन की माये बुजि तब पावै ॥
बीन मणि सरप चवियेसारि ॥ नीरांनी

कहिबेकोसोचबेहमावै॥ऊनोपंथते
हारे॥२१३॥रानीबोलाच॥सबबात्यकदेख
वहनाही॥रानीसोचकयौमनमाई॥जौ
वौपैंकहरोदिनआवै॥ज्यौंतासअगोमो
हीधावै॥२१४॥सोअबनहीदईकहोकौ
यौ॥अचरसांसरानीजबत्यायौ॥तकहे
नामुखनकेरी॥दईकहाबोलदिगहेमे
२१५॥बात्यकबोलाच॥बात्यकनिकटे
समटिसबझवा॥रोयेकयेकुहे
मुवा॥रानीनहीबोलनमाई

मुरछो आई॥२१॥ बहोत बिरोग कहना
ही॥ घोडो मुच बल्यो ई मगई॥ महा बिरोग
कह्यो नही आवे॥ तीर बहोत बोल नही
आवे॥२२॥ दोहा बिरह बान त्यां मोसउरि
धरि परि परी गाय॥ मरद न करि बात
कहैं॥ सावदां न होय माय॥२३॥ रांन बाचा
तब बोली रिषसुतन सों॥ मुझ तब बनउ
नारे॥ कहा छबी कैसे मुरो॥ बीर कहो बी
नारे॥२२॥ बात कबो न्रे॥ तब बोलेबा

त्यक्त सक्त त्यसी रे पात्यक गाथौ करि आई॥२२
उच्चै दरषत तैं गास्यौ॥ तुमेम स्यौ सुनि माई॥
२३॥ जो हुवा सक्त ज्ञ होती॥ बात बिगत न्यौ
हार॥ पीछै बंदन सक्त त्यक करि॥ मारि गत्या गै
बार॥२२४॥ बात्य बोबा त्र॥ फिरि बात्य ये क
सुदे आई॥ कऊ रि बात कही सवाई॥ सुत हुना
समात्यो आवी॥ बात्य क सक सा धि हुसा धी॥
२२५॥ रिषसेती प्रनाम करा ई॥ तुम सुं वचन क
हा सुने माई॥ रिषकी टहत्य द्वो मे। जिन जाई॥
नपत भ्रदे जो वचन उचारी॥ तिहम क स्यौ

समजेत्यो सारे॥उठि चत्वी माता बनदोरी॥
चत्वी चत्वी यो चीति हिगोरी॥२२६॥रानी
वो बाच॥सुत रुतास पस्यो तहां पायो॥त्वा
यो गोदे मबोल बुलायो॥बोल्यो पुत्र कहां
भयो तोरी॥गहर ना हि करु अब मोरी॥
२२७॥सब सुख गयो घरि बंदि आई॥दीनअ
नाथ चल्यो तजि माई॥परे गोदि मसीसह
त्यायो॥माता नबहि कै उसुलायो॥२२८॥
रुतास वो बाच॥तब रुतास बात बेभाषी॥
माता दई अके त्यागषी॥मपापी कछु टहल

नकीनीकरता आनि असीगतिकरी॥२२९॥
चल्यौ औरकुछ कहननपायौ॥रामकहतऊ
चकीसमझायौ॥मरतिकन्नयौमातबत्य
लावै॥इजोकूनसमिसहरावै॥२३०॥रानीको
बाचै॥बिनअबत्यामरे तिकसुतपासैं॥रिष
कसीदोऊगयेनासे॥सोचयेकछेमतिआवै॥
सुतजोदागमोरकरिपावै॥२३२॥ऊचेदैनही
वौहोतहगकीयौ॥दोऊहाघडारि
यौ॥मैतेकबोजहैभारी॥
लीयेनारी॥२३३॥देवदे

समजेत्यो सारे॥उठि चत्वी माता बनदोरी॥
चत्वी चत्वी यो चाति हिगोरी॥२२६॥रानी
वोबाच॥सुतरुतास पस्यो तहां पायो॥त्वा
यो गोदे मबोत्व कुत्यायो॥बोत्यो पुत्र कहां
भयो तोरी॥गहरनाहि कहु अबमोरी॥
२२७॥सबसुभगयो घरिबंदि आई॥दीनअ
नाथ चत्यो तजिमाई॥परेगोदिमसीसह
त्यायो॥मातानबहि कंगसुत्यायो॥२२८॥
रुतास वोबाच॥तबरुतास बात वेआषी॥
मातादई अकेत्वीराषी॥मपापीकछुटहत्व

नकीनीकरत [illegible]
चल्यौ औरकु [illegible]
चकीसंगा [illegible]
लावौ॥इजो [illegible]
बाचै॥वित [illegible]
कसीदोऊ [illegible]
सुतजोदाग [illegible]
सौहोतह [illegible]
यौ॥मतेक [illegible]
लीयेनारी॥२३॥ [illegible]

या इस सकल्प नहीं सोगा यो॥ बहुत बिरोग क
है कोता को॥ ऐसो कगेर हियो है का को॥२३६
मर हैटे इस्थोत इच नही॥ बैसदरनाहि। नि
हि गाही॥ अब मेघ माहा इबे मावै॥ असो कष्ट
कहु कहै तन आवै॥२३७॥ बुनी त्यकुटक
॥ मरट्के ही॥ बंसदर पुनि त्याइ हेरो॥ प
नीछा करी मघ माही॥ सरइ रिपाइ तिसगं
ही॥२३६॥ फुसवा त्यि जब लाद्दी दी यो॥ आ
लै जलत बहोत इष को यो॥ मेघ माहिं बाल
तजा आनी॥ अहु ये क बस तरत न होई॥

नगतमरतसो चयो आवै॥ सो ईसो च भति
नरि पावै जैकहै पावै जैको ईकहै सा धक
मुद्रा॥ कारज भिन्न कारन है जुद्रा॥ २४२॥
कारन सा ध मुद्रा को नाही॥ कारिज भिन्न
कारन है जुद्रा॥ कारज देह मृ ठ है वाही॥ दे
ही चस्या मुक्ति हो आवै॥ सो चतन गयो॥
सो च मति आवै॥ २४३॥ ताते सो व उचितही
होई॥ सुतरु तास नगत हो सोई॥ भवो भाड़ो
माग्यो तैं हि वारा॥ रानी कहै दे बो हारा॥
२४४॥ रानी दो व च॥ वस्तर येक दूसरो नही

बामन्या इजदेतत्र्या
सुनोजी॥ भाकाछिन
सतरयेकदेजो
बांऊ॥२घ६॥राजा
छिबदैमोही॥
२घ७॥फाछिबी
होकरततनको
यौहोतबदवौ
औत्यैराजाजा
जबरियकलौ

परी अस्तुतोई॥२६८॥रानीदोवाच॥सुतस्त्वा
समरन हैकीयो॥त्यागीबारदागमैदीयो॥बात्य
कहते हैं सोई॥तेसब कहीबिचहूयहोई॥२७०
२६९॥सेवकागब मोहोतोसुततेरो॥कारेजस
कत्वकरतहोमेरो॥धरमदेसधानिमयेहोई
वारयधोसंमजोमतिकोई॥२७०॥तांनौत्तब
बेरहेत्योत्नीना॥करमबीसातभोरइषदी
ना॥कासन्नपहोतोयेकभोरा॥बत्तीबमो
सतीभयेगैरा॥२७१॥रानीदांयेहारकहे
मरा॥पत्योचीत्रमुबेसंवारा॥सोसरयासे

पुगी मुज बांदित मत्याई॥ रिषदेव कछु आम
नदीनी॥ दादि चोर देत जो कोई॥ वा के संग
चोर ही होई॥ जाये राय पत्ये गुजरानी॥ हारमु
स्यो का हि गे बांनी॥ या क का जि ओर हंममा
रा॥ तुंमी रांम मुस्यो क्यूं हारा॥ २५॥ राजा वो
बाच॥ सुरतेपा क असोतं न पायो॥ का हिम
न चोरी मत्याये॥ संग तिसा दत्यगी न कोई
रिष आप्रमतैं दत्य करा ई॥ २६॥ रांनी वो
बाच॥ तब या क हे ब चन ये क मानो॥ ओ

बचोत मार करते संगि धावै॥ बचोत लोक
महरट लो आवै॥२६२॥ राजा बोवाच॥ योउ
मरहट की सु बचारी॥ सो चौ भचोत दे बिनी
जनारी॥ या कौं ये मारत क्यु ल्यायौ कहा गु
कहा मुस्यौ परायौ॥२६३॥ याहा तो माहा
चघा नारी॥ सुन के मुये जिस्ट मति धारी
या अबला कुं काये मारो॥ कहा भयौ हम सु
उचारो॥२६४॥ हरी दास बोवाच॥ सबा कोड़ि
कोहा रहीरा यौ॥ या के गल्ल मायौ॥

राजाकहौतौ[illegible]
हाहैसारौ॥२६५[illegible]
नहीमान्यौतुमारौ[illegible]
हारौ॥घरबु[illegible]
मुस्यांकेतेदीनज[illegible]
कहीकांतेश्रोर[illegible]
येराही॥करमबो[illegible]
यौसंनीराजायेम[illegible]
मारनजबत्यीयो[illegible]

बचौत मार करते संगि धावै ॥ बचौत त्यौक
महरट त्यौ आवै ॥ २६२ ॥ राजा वौबाच ॥ यौउ
मरहट की सु बचारी ॥ सो क्यौ न बौत दे बिनी
जनारी ॥ या कौ ये मारत क्युं त्या यौ कहा गु
न कहा मुस्यौ मरा यौ ॥ २६३ ॥ या हा तो माहा
सु घ घा नारी ॥ सुन के मुये त्रिसट मति धारी
या प्रबला कुं काये मारौ ॥ कहा न यौ हमसु
उचारौ ॥ २६४ ॥ हरी दास वौबाच ॥ सवा कोडि
को हार हीरा यौ ॥ या क गत्य ही बन मा यौ ॥

राजाकह्यौतौरिइहिमारौ॥हममसकीनक
हाहैसारौ॥२६५॥राजाबोल्यौ॥पुत्रसोग
नहीमीन्यौतुमारौ॥राजाकह्यौत्यौसत
हारौ॥घरकुन्यौरुतासमरिजै॥तोहार
मुस्यांकेतेदीनजीजै॥२६६॥रांनीबोल्यौ॥
कशीकांनेश्रीरनजनाई॥रांनीकहीबनी
येराई॥करमबीसाति होयेसबश्रावै॥
यौरांनीराजायेगुजरावै॥२६७॥कामिवङ्ग
मारनजबत्यीयौ॥बोल्यौतोरिकै

याकै हाथि षड्ग ये दीजै॥ये मार मेरी गति
कीजै॥२६८॥रानी बोलाचै॥मन मैं कहमि
रति ये आई॥पीतकै हाथि जु मरन त्याई॥
लोक कहै तेरी कोहाला गै॥तेरहाथि आन
येह त्याग॥२६९॥राजा बोलाच॥हरिचंदक
हसुनौ रे नाई॥याजीव असी हो आई॥बोहो
तलोक देषांडर आवै॥मेरहाथि मीच मंतना
वै २७०॥राजाहाथि षड्ग जब लीये॥तीनौं
लोक कपांनि तोई॥सब ब्रह्मंड सबद हुवा
हेहेकार देव जषि जुवा २७१॥जुवा नौगतो

कैमहोई॥ जुवामनि [illegible]
वाहैनत्यागयो जबही॥ [illegible]
तबही॥२८२॥महादेवोवाच [illegible]
पतहीबोल्या॥सबदेवातें [illegible]
सखीमीत्र=ओतारहंमा [illegible]
रेनीहारा॥२८३॥=अग्निसुतसमा [illegible]
यौ॥सुकररूपसरातनकीयौ॥ [illegible]
तधारितंत=आयौ॥२८४॥ [illegible]
बदीयौ॥सबदेवामीत्रेसातन [illegible]
गनिकारूपसकतिहसोई॥तोसत [illegible]

लिबीसाई॥२८५॥जीतेनेकहूदरसतोपाये
॥देवार्सबजानिसबाये॥घकेउनजनमरम
रनते॥तुमवादरसावैतोदरसनते॥२८६॥
बढिबीरांणादेवताआये॥तेजोमयेसरीर
वाये॥मुपंहमडिष्टिअरजेजैहोई॥येहध
तहूत्वोकेनहिगोई॥२८६॥सपतकोडि
तेंकीनौंकत्यांणा॥तोसंतिरहतेहंमजांनि
॥गंगामद्धिहूतासबहायो॥उत्पटोतारतडिष्टि
सोआयो॥२८७॥राजापराघणांमकराई॥
मातामित्वीसीतत्वताआई॥अगनिदहातें

कंचन काटै॥सुत हुता सरूप तन बाटै॥२८घ॥
देवता बोलाच॥धूप दीप आरती संजोई॥सु
रपति सत करहु सोई॥बड़ो सती सारै॥तेरे का
जि आयु तन धारै॥राजा बोलाच॥तब हरिच
द कहै बिधि असी॥मांगन केरि बासना क
सी॥२८९॥देवता बोलाचै॥धूप दीप आरती सं
जोई॥सुरपति सहित करहु सोई॥बड़ो सती सा
रिज रामाही॥तोऊ पराति हुसरा नाही॥मांगि मां
गि बोलै सुरसारि॥तेरे काजि आयु तन धारि
॥राजा बोलाच॥तब हरचंद कहै बीधि अ

सी॥ मांगत केरी बासना कसी॥२८९॥ देवता
दो बाच॥ तब सुरकहै कछु तो त्वीजि॥ पाछै
दोसहमु नहीं दीजि॥ राजा दो बांच॥ तब हर
चंद कहै बर ये हु॥ असो कष्ट का हु जी नदे
॥२९०॥ देवदेसमुनि विष्णु महेसा॥ ब्रह्मा
यो होहु बर असा॥ ती हु त्यो कतेरी जै हो
॥ अतरि बरातेहं सोई॥२९१॥ आपन सो अ
हु करित्वीयो॥ अतरित्वो क औरर चेदीयो॥
हरिसों ये आसा निसदा शी॥ सीच्चनोना धमी
लिहं आशी॥२९३॥ माथहातता कदीयो॥ अ

पजसाउ कु करि त्रीया॥ताराति सीस्त्रीनही
काई॥पतिब्रता कु मास मगाई॥सुतस्तु ता
ससमा कोनाही॥फिरि दुटौ तै कु भौनमाही
२५७॥तिकु नमीत्रि पुर नबुपायौ॥जगतिदा
नमैदानसबु आयौ॥करममपबुनही जग
तिजगावै॥सातिगकरमहोयेनही आवै॥
२५८॥करमकरफल आसनकोई॥अरिआ
पैदेवछीटकाई॥ममेरी करितुनमानै॥फ
लबासनांबी जनही आनै॥भतिह
तहीजान॥हरिउपदेसकरमन

ही आवै॥ निरमत्र कोराजकरावै॥ मैंत्याग्यो
औरकौंदीजे॥ दीयौराजकहाफिरिलीजै॥
३०० १॥ बिस्वामी तैंदोवाच॥ तबरिषहूता
सहीसमजावै॥ पुत्तराज अज्यो ध्यामावै॥
उतर॥ उहैबातहूतासबधाना॥ मेरीसौंटर
मतिधाना॥ ३०० २॥ रीषदोवाच॥ देऊसराप
राजनहीलेहो॥ रायेकहौकीरयाकरिदे
हो॥ पितासीषरिष आग्यामानी॥ अज्यो
ध्याराजकीयोउनिआनी॥ ३०० ३॥ हूतास

वो[illegible]कायौराजनहीमन-भायौ। तब
वहीगढ़हुतासबसायौ॥ पाहै अमर भयौ हम
ही॥ भागवमोतांदरसनहोही॥ 3007॥ ध्यो
तदासौ॥ उहीदेहै हरवंदसीदरुवा॥ मति
जौनौ जनमकौमुवा॥ भजनानंदीग्रौसी
धियाही॥ सदापावै कृपासंगाही॥ 3008 का
है भेषमनीमनि-ग्रानी॥ सोहरवंदवाज
करिमानै॥ भेषधरिकछुनगानिनहोई
ततमगतिजानत्रिसोही॥ 3

श्रोगनकौं देहै धराई॥सबको श्रोगन लेते
जाई॥ श्री सुषबोत्यीया बांनी॥ श्रोगनका
हु तिन के श्रांनी॥३००७॥ तो मेरी कही कुन
बलावै॥ घटि बढि कछु बोत्यन श्रावै॥
जेकोई कहन जांनै सोई॥ तो कौ उचित
करन कौं होई॥३००८॥ तो मकहा सुनतु
म श्रांनी॥ सीसबको बचन तो तरी बानी॥
पुरो श्रोगन नाहन श्रांनै॥ ऊरौं मरौं मकहा

कोऊ जांनै॥३००२॥ घटि बढि सो मेरी मति
सारौ॥ उन कौ श्रौगुन कौ मन धारौ॥ उन
की गति वेही पै जांनै॥ मन वचु छि मति
कौ प्रहि चांनै॥३१००॥ दोहा॥ उदेधि दो
ति करि त्वीजेये॥ त्वेषन भार प्रगार॥ ध्यां
न दास सब वीसु घात्वीयै॥ भगवत भग
ति प्रपार॥३००१॥ त्वीषन का जिसु रसती
लगौ॥ सब ग्रंथ मत कवि माहि॥ रांम संमान
न त्वीषस कै॥ हरि चरचा मति नाहि॥

३००१२॥ हरिचंदसतब्यांनिकरि॥की
यौ भगतिरससार॥ जोग्यांनीसरवैणुक
रैं॥ सोसबउतरपारै॥३००१३॥ इतीश्री
हरिचंदसतग्रीथसपुरणसमापातै॥ल्वी
षतैंत्वीषीकष्टकरबाचैसोदिबीबारि
सोजनग्रापोथीपढैसोजीनउतरपार
पोथीलाल्यास्योनाथकीलीषैतीसुक
रंमदाहुपंथीकीसरअलवरसमतअग
सबाहोतरेका॥१०१४॥ रामरामरामरामराम